Satyavachan

Prog. No. 318

Judges 10:3-11:10

मित्रों, नमस्कार!

हमने देखा कि इस्राएल बार–बार परमेश्वर से दूर हो जाता था और परमेश्वर दण्डस्वरूप उन्हें किसी न किसी अन्यजाति के अधीन कर देता था कि उत्पीड़न के द्वारा वे उसके निकट आएँ और जब वे कष्टों में उसे पुकारते थे तब वह अपनी दया में किसी कमजारे मनुष्य को आत्मा प्रदान करके उन्हें छुटकारा दिलाता था। इसी प्रकार परमेश्वर ने उन्हें बद्दुओं के आतंक से छुटकारा दिया, जिससे एक दीनहीन मनुष्य गिदोन परमेश्वर द्वारा उनका न्यायी चुना गया था। गिदोन की अगुवाई में उन्हें 41 वर्ष शान्ति और समृद्धि के प्राप्त हुए, परन्तु गिदोन से चूक हो गई। उसने अन्तर्जातिय विवाह किया और एक रखेल भी रख ली। उस रखैल का पुत्र अबीमेलेक एक दुष्ट जन था, जिसने बलपूर्वक इस्राएल पर तीन वर्ष शासन किया। परमेश्वर ने उसे और शकेम निवासियों को उनके कुकर्मों का दण्ड दिया। अन्ततः अबीमेलेक गृहयुद्ध में मारा गया।

उसके बाद तोला न्यायी बना, परन्तु उसने कोई विशेष काम नहीं किया।

तोला के बाद गिलादी याईर न्यायी बना

न्यायियों 10:3–5

> *"उसके बाद गिलादी याईर उठा, वह बाईस वर्ष तक इस्राएल का न्याय करता रहा।*
>
> *और उसके तीस पुत्र थे जो गदहियों के तीस बच्चों पर सवार हुआ करते थे; और उनके तीस नगर भी थे जो गिलाद देश में हैं, और आज तक हव्वोत्याईर कहलाते हैं।*

और याईर मर गया, और उसको कामोन में मिट्टी दी गई।"

उस पुरूष की एक ही उपलब्धि का उल्लेख किया जाता है कि उसके तीस पुत्र थे और उसने उन तीसों पुत्रों को गधे दिलवा दिए थे। उसने उन्हें महंगी कारें नहीं दिलवाई थी। उन्हें गधों पर सवारी करते देखना बड़ा ही विचित्र दिखाई देता होगा।

याईर की कहानी में मेरे सामने तीन बातें आती हैं।

1. निरूद्देश्य समृद्धि।
2. प्रभावरहित बड़प्पन।
3. अधिकार से रहित प्रतिष्ठा।

उन दिनों में गधा समृद्धि का प्रतीक था। गधा मनुष्य के धनधान्य का द्योतक था। उदाहरण के लिए न्यायियों अध्याय 5 पद 10 देखें, "हे उजली गदहियों पर चढ़नेवालों, हे फर्शों पर विराजने वालों, हे मार्ग पर पैदल चलने वालों ध्यान रखों।" यह पद ऊंचे स्तर मनुष्यों या उच्च स्तरीय कर्मचारी वर्ग को सम्बोधित करता है। अतः गधा ऐश्वर्य का प्रतीक था, और राजाओं की सवारी था। इस विषय पर प्रश्न भी किया जाता है कि उस समय क्या घोड़े नहीं थे? थे, परन्तु गधा शान्ति का प्रतीक था, और घोड़ा युद्ध का। उस युग में घोड़ो का आयात किया जाता था। परन्तु गधा शान्ति और राजा का चिन्ह था।

आपको स्मरण होगा कि मसीह यीशु भी गधे पर सवार होकर यरूशलेम आए थे। हम जकर्याह अध्याय 9 पद 9 का गलत अर्थ निकालते हैं, जहाँ लिखा है, "हे सिय्योन, बहुत ही मगन हो! हे यरूशलेम, जयजयकार कर! क्योंकि तेरा राजा तेरे पास आएगा; वह धर्मी और उद्धार पाया हुआ है, वह दीन है, और गद्हे पर वरन् गद्ही के बच्चे पर चढ़ा हुआ आएगा।" जकर्याह के कहने का अर्थ यह नहीं था कि गधे की सवारी करने के कारण वह दीन हुआ। उसके कहने का अर्थ यह था कि वह राजाओं की सवारी करने के उपरान्त भी दीन है। यदि वह राजा न होता तो गधे की सवारी करके यरूशलेम में प्रवेश करना और जयघोष तथा होसन्ना आदि सब कल्पना मात्र ही होता।

याईर धनवान और प्रतिष्ठित जन था। उसने अपने पुत्रों को गधे खरीदवा दिए थे, जैसे आज किसी के घर में तीस कारों के लिए गराज हों। यह एक परोपकारी पिता के लक्षण थे, वह उदार था और मेरे विचार में उसने अपने पुत्रों को बिगाड़ दिया था। वे जो भी चाहते, वह उन्हें दिला देता था। वे विलासता का जीवन जी रहे थे। संभवतः गधे भी अलग–अलग प्रकार के थे और याईर ने अपने हर पुत्र के लिए जो सबसे नये गद्हे थे वो दिलाए थे। क्या इन गद्हों से परमेश्वर की महिमा हो रही थी? क्या इन गद्हों ने

याईर को उत्तम न्यायी बनाया? क्या उसका एक भी पुत्र मिशन सेवा में गया था? क्या वे लोगों के लिए आशीष बनें? नहीं वे गिलाद में ही रहते थे।

सच है कि गधे रखने में कोई बुराई नहीं है। दूसरी ओर एक न्यायी होते हुए अनेक पुत्रों और गधों में समय बिताना में कोई अच्छी बात नहीं है। हमारे लिए एक बात पर ध्यान देना है। हमारा प्रभु भविष्यद्वाणी पूरी करने के लिए और अपने आप को राजा दर्शाने के लिए गद्हे पर सवार यरूशलेम आया और लोगों ने होसन्ना के नारे लगाए। इस बात से शैतान अप्रसन्न था और धर्मगुरू उसके नगर प्रवेश एवं नारों के विरूद्ध थे। याईर के गद्हों के कारण लोगों ने एक बार भी होसन्ना का नारा नहीं लगाया। मेरे विचार में जब उनमें से एक भी गद्हा रेंगता था तब शैतान मुस्कुराता था और दर्शकों का मनोरंजन होता था। याईर निरूद्देश्य समृद्धि का चित्र प्रस्तुत करता है। मेरे मित्रों, यह एक संकट स्थिति है। नूह के युग में यही दशा थी। वे विवाह करने और करवाने में व्यस्त थे। यही बात सुलैमान के बन्दर और मोर के व्याापार से प्रदर्शित होती है। वह मोर सुन्दरता के लिए और बन्दर मनोंरजन के लिए आयात करता था।

कई वर्ष पूर्व एक स्कूल के विद्यार्थियों ने अपने उपाधिग्रहण कक्षा के लिए एक आदर्श वाक्य चुना था, "निरूद्देश्य जोश मूर्खता है।" वैसे तो यह आदर्श वाक्य अधिक मायने नहीं रखता है परन्तु निश्चय ही आज की परिस्थिति प्रगट करता है। आज की समृद्धि निरूद्देश्य है। क्या मैं आपसे पूछ सकता हूँ कि आपके जीवन का लक्ष्य क्या है? क्या वह निरर्थक है? क्या वह निरूद्देश्य है? क्या आपको जीवन नीरस प्रतीत होता है? शेक्सपीयर ने अपने नाटक हेमलेट में लिखा, "इस संसार को व्यवहार में लेना मुझे कैसा नीरस, पुराना और अलाभकारी लगता है।" आज हमें जो आवश्यकता है वह दिशानिर्देश और अयामों की है। हमें एक उद्देश्य चाहिए और मसीह का उद्देश्य किसी भी मनुष्य के लिए एक चुनौति है। वृद्ध याईर मनुष्य के लिए एक चुनौति है। वृद्ध याईर निश्चय ही एक न्यायी था, नहीं?

याईर का जीवन अधिकार रहित प्रतिष्ठा का प्रतीक था। वह समुदाय का एक माननीय जन था। पुलिस ने संभवतः उसके पुत्रों का कभी चालान नहीं किया। परन्तु पद पांच याईर के विषय में स्मरण योग्य कोई बात नहीं कहता है। उसे दफ़न भी किया गया तो किसी अज्ञात स्थान में, उसने एक भी विशेष कार्य नहीं किया। उसने एक भी उपयोगी सेवा नहीं की। उसने कभी विजय प्राप्त नहीं की। उसके पास तीस गधे तो थे परन्तु आत्मिक बल नहीं था। आज कलीसिया ने अपना बल खो दिया है। याईर में हम कैसा परिदृश्य देखते हैं!

एक बार मैं झाँकियाँ देख रहा था। उस झाँकी का विषय था "तैयार रहो।" तभी एक झाँकी पेट्रोल समाप्त हो जाने के कारण मेरे ही सामने के स्थान में रूक गई, मुझे हँसी आ गई। वह झाँकी एक तेल की

कंपनी थी और उन्हें देख मुझे मसीहयों का स्मरण आया। वे अति सुन्दर हैं परन्तु उन में बल नहीं है। वह न्यायी याईर है। उसने कुछ नहीं किया। वह मर गया और गाड़ा गया। पलिश्तियों और अम्मोरियों के अधीन 18 वर्षीय दासत्व!

न्यायियों 10:6

> ***"तब इस्राएलियों ने फिर यहोवा की दृष्टि में बुरा किया, अर्थात् बाल देवताओं और अश्तोरेत देवियों और आराम, सीदोन, मोआब, अम्मोनियों, और पलिश्तियों के देवताओं की उपासना करने लगे; और यहोवा को त्याग दिया, और उसकी उपासना न की।"***

आप सोच रहे होंगे कि अब तक तो इस्राइल को अनुभव से सीख लेना था, कि मूर्तिपूजा के कारण वे संकट में पड़ जाते हैं। इस बार उनकी मूर्तिपूजा का दण्ड था पलिश्तियों और अम्मोनियों के दास बने और अठारह वर्ष दासत्व में रहे। मानवीय स्वभाव ही पतित है। यिर्मयाह ने कहा 17:9, "मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देने वाला है, उसमें असाध्य रोग लगा है; उसका भेद कौन समझ सकता है?" आप और मैं निश्चय ही मन को समझ नहीं पाते हैं। हमारे लिए यीशु से पूर्व के इन मनुष्यों की ओर उंगली उठाकर यह कहना आसान है, "तुमने गलत किया।" इसकी अपेक्षा कि हम अपने कामों को देखें।

हम आज के युग में क्या कर रहे हैं? क्या मैं कह सकता हूँ कि आज कलीसिया में अधिकृत ईश्वर त्याग है? यह मानव स्वभाव है। इसका कोई समाधान नहीं है। कारण क्या है? हम गलत स्थान में सहायता की भीख मांग रहे हैं। केवल परमेश्वर के निकट आने से ही हम सही मार्ग पर होंगे। मैं जानता हूँ कि मेरी बात पुराने युग की और कटु प्रतीत होगी परन्तु मसीह से एक हज़ार वर्ष पूर्व भी यही मानवीय धारणा थी। इस्राएल देवी–देवताओं के पीछे गया और सच्चे परमेश्वर का त्याग किया और देखिए उसका परीणाम क्या हुआ।

न्यायियों 10:7

> ***"तब यहोवा का क्रोध इस्राएल पर भड़का, और उस ने उन्हें पलिश्तियों और अम्मोनियों के अधीन कर दिया।"***

परमेश्वर का कोई साधन यदि उसे निराश करे तो वह उसे हटा सकता है। हम प्रायः सोचते हैं कि परमेश्वर को कलीसिया बनाए रखना है वरन् कोई विशेष कलीसिया और वह देश को भी बनाए रखेगा जो

मिशनरी भेजता है। परन्तु मैं आपसे स्पष्ट कहता हूँ कि परमेश्वर को हम में से एक की भी आवश्यकता नहीं है। वह हम पर निर्भर नहीं है। हम ही हैं जो उस पर निर्भर हैं।

इस्राएल संभवतः इस समय सर्वाधिक पतित अवस्था में था। उनकी दशा बहुत बुरी थी।

न्यायियों 10:10

> *"तब इस्राएलियों ने यह कहकर यहोवा की दोहाई दी, कि हम ने जो अपने परमेश्वर को त्यागकर बाल देवताओं की उपासना की है, यह हम ने तेरे विरूद्ध महा पाप किया है।"*

अन्ततः समय ऐसा आया कि वे अत्यधिक निराश हो गए। अब उन्होंने परमेश्वर को पुकारा। इतिहास का चक्र चल रहा है। इस बार क्या हुआ?

न्यायियों 10:11–16

> *"यहोवा ने इस्राएलियों से कहा, क्या मैं ने तुम को मिस्रियों, एमोरियों, अम्मोनियों, और पलिश्तियों के हाथ से न छुड़ाया था?*
>
> *फिर जब सीदोनी, और अमालेकी, और माओनी लोगों ने तुम पर अन्धेर किया; और तुम ने मेरी दोहाई दी, तब मैं ने तुम को उनके हाथ से भी न छुड़ाया?*
>
> *तौभी तुम ने मुझे त्यागकर पराये देवताओं की उपासना की है; इसलिये मैं फिर तुम को न छुड़ाऊँगा।*
>
> *जाओ, अपने माने हुए देवताओं की दोहाई दो; तुम्हारे संकट के समय वे ही तुम्हें छुड़ाएँ।*
>
> *इस्राएलियों ने यहोवा से कहा, हम ने पाप किया है; इसलिये जो कुछ तेरी दृष्टि में भला हो वही हम से कर; परन्तु अभी हमें छुड़ा।*
>
> *तब वे पराए देवताओं को अपने मध्य में से दूर करके यहोवा की उपासना करने लगे; और वह इस्राएलियों के कष्ट के कारण खेदित हुआ।"*

परमेश्वर कैसा दयालु एवं अनुग्रहकारी है!

न्यायियों 10:17—18

> *"तब अम्मोनियों ने इकट्ठे होकर गिलाद में अपने डेरे डाले; और इस्राएलियों ने भी इकट्ठे होकर मिस्पा में अपने डेरे डाले।*
>
> *तब गिलाद के हाकिम एक दूसरे से कहने लगे, कौन पुरूष अम्मोनियों से संग्राम आरम्भ करेगा? वही गिलाद के सब निवासियों का प्रधान ठहरेगा।"*

इस्राएल का कोई अगुवा नहीं था। यह अभक्त मनुष्यों या मानव पीढ़ी की पहचान है। आज वर्षों से संसार में ही अगुवाई की कमी है। हमें प्रभावी अगुवाई की आवश्यकता है। हमें प्रभावी अगुवाई की आवश्यकता है परन्तु अगुवा हैं ही नहीं। इस्राएल का भी यही अनुभव था। इस बार वे एक अति असामान्य मनुष्य की ओर निहारते है जिसे अन्य परिस्थिति में वे कभी मान नहीं देते।

अध्याय 11

विषय : नवां न्यायी यिप्तह और उसकी ना समझ शपथ!

न्यायियों 11:1

> *"यिप्तह नाम गिलादी बड़ा शूरवीर था, और वह वेश्या का बेटा था; और गिलाद से यिप्तह उत्पन्न हुआ था।"*

उसके विषय में पहली बात तो मैं यह कहूँगा कि वह एक असाधारण अगुवा था। परन्तु उसका एक दोष यह था कि वह एक वैश्या की अवैध सन्तान था।

न्यायियों 11:2

> *"गिलाद की स्त्री के भी बेटे उत्पन्न हुए; और जब वे बड़े हो गए तब यिप्तह को यह कहकर निकाल दिया, कि तू तो पराई स्त्री का बेटा है; इस कारण हमारे पिता के घराने में कोई भाग न पाएगा।"*

नीतिवचन 2:16 में लिखा है, "जो स्त्री चिकनी चुपड़ी बातें बोलती है।" उनके पुत्रों से सावधान रहना था क्योंकि उस समय वैश्याएँ अन्य जातियों में से थी। जोसेफुस ने लिखा है कि गिलाद की पत्नी एक अन्यजाति स्त्री थी। यहूदी लेखों में उसे इश्माएली वंशी कहा गया है। अतः यिप्तह एक अन्यजाति वैश्या की संतान था। अवैध होना मनुष्य पर जन्म से ही कलंक होता था, चाहे वह आगे चलकर कुछ हो। यिप्तह को समाज से बाहर कर दिया था। व्यवस्थाविवरण 23:2 के अनुसार वह परमेश्वर की प्रजा में नहीं रह सकता था।

अवैध सन्तान होना एक बाधा है, परन्तु अनेक पुरूष इस पर विजयी हुए हैं। राजाओं, सम्राटों, सेनापतियों, कवियों और यहाँ तक कि पोप आदि में भी अनेक ऐसे मनुष्य रहे हैं जो अवैध सन्तान थे। यिप्तह इस कंलक से उभर आया था।

न्यायियों 11:3

"तब यिप्तह अपने भाइयों के पास से भागकर तोब देश में रहने लगा; और यिप्तह के पास लुच्चे मनुष्य इकट्ठे हो गए; और उसके संग फिरने लगे।"

यिप्तह दुस्साहसियों के जत्थे का अगुवा था। उसे अपने राष्ट्र का अगुवा बनने के लिए तीन बाधाओं को पार करना था। वह एक वैश्या की सन्तान था, वह समाज से बहिष्कृत था, वह तुच्छ समझे जानेवालों का सरदार था। वह किसी भी परिप्रेक्ष्य में देखें तो योग्य नहीं था परन्तु परमेश्वर ऐसे ही मनुष्यों को काम में लेता है। परमेश्वर के भेद अबोध हैं। वह इस संसार के तुच्छों को काम में लेता है। परमेश्वर जिनसे सेवा लेना चाहता है उन्हें दीन भी बनाता है। उसने यूसुफ को दीन बनाया, उसने मूसा को दीन बनाया, उसने दाऊद को दीन बनाया,। हमारे प्रभू ने भी स्वयं को दीन बनाया था। वह मनुयों द्वारा तुच्छ जाना गया। और उसका परित्याग किया गया। वह तो कोने का पत्थर था जिसे राजमिस्त्रयों ने निकम्मा ठहराया था। परन्तु वही कोने का पत्थर था। उसके बैरियों ने कहा, "हम इसे अपने ऊपर राज करने नहीं देंगे।" परन्तु परमेश्वर ने उसे प्रतिष्ठित किया और उसे वह नाम दिया जो सब नामों में ऊँचा है।

मित्रों, आज परमेश्वर की सन्तान होने का दावा करने वाले असंख्य मनुष्य हैं, परन्तु वास्तव में वे हैं नहीं। उनका नया जन्म नहीं हुआ है इसलिए वह एक अवैध सन्तान हैं। आप परमेश्वर की वैध सन्तान हैं। आप परमेश्वर की वैध संतान तब ही बन सकते है जब मसीह यीशु में विश्वास ले आएँ।

यिप्तह समाज से बहिष्कृत था, परन्तु अब सम्मान पाता है।

न्यायियों 11:4—8

"और कुछ दिनों के बाद अम्मोनी इस्राएल से लड़ने लगे।

जब अम्मोनी इस्राएल से लड़ते थे, तब गिलाद के वृद्ध लोग यिप्तह को तोब देश से ले आने को गए;

और यिप्तह से कहा, चलकर हमारा प्रधान हो जा, कि हम अम्मोनियों से लड़ सकें।

यिप्तह ने गिलाद के वृद्ध लोगों से कहा, क्या तुम ने मुझ से बैर करके मुझे मेरे पिता के घर से निकाल न दिया था? फिर अब संकट में पड़कर मेरे पास क्यों आए हो?

गिलाद के वृद्ध लोगों ने यिप्तह से कहा, इस कारण हम अब तेरी ओर फिरे हैं, कि तू हमारे संग चलकर अम्मोनियों से लड़े; तब तू हमारी ओर से गिलाद के सब निवासियों का प्रधान ठहरेगा।"

शिलाद के प्राचीनों ने यिप्तह के समक्ष एक अच्छा प्रस्ताव रखा।

न्यायियों 11:9–10

"यिप्तह ने गिलाद के वृद्ध लोगों से पूछा, यदि तुम मुझे अम्मोनियों से लड़ने को फिर मेरे घर ले चलो, और यहोवा उन्हें मेरे हाथ कर दे, तो क्या मैं तुम्हारा प्रधान ठहरूँगा?

गिलाद के वृद्ध लोगों ने यिप्तह से कहा, निश्चय हम तेरी इस बाते के अनुसार करेंगे; यहोवा हमारे और तेरे बीच में इन वचनों का सुननेवाला है।"

यिप्तह ने गिलाद के अगुवों के समक्ष एक कठिन शर्त रख दी कि यदि वे विजय पाएँ तो वह उनको अपना घमण्ड दूर करके उनका प्रधान होगा। उसकी शर्त माननी पड़ी अपना घमण्ड त्याग कर उसकी शर्त स्वीकार करना पड़ी थी। यह उनके लिए अपमान जनक बात थी कि जिसे उन्होंने अपमानित करके देश से निकाला दे दिया था, आज उसी के सामने वे हाथ जोड़ रहे हैं और वह स्पष्ट कहता है कि यदि वे उसे अपना न्यायी बनाएँगे तो वह युद्ध के बाद भी उन पर शासन करेगा। इन शर्तों के आधार पर वह युद्ध की बागडोर सम्भालता है।